SAMVARDHINI
PEER REVIEWED MULTILINGUAL E-RESEARCH JOURNAL
(ISSN ONLINE: - 2583-7176)
https://samvardhini.in
https://www.samskritpromotion

SAMVARDHINI :- 01/06/2026
Volume – 8
Issue – 1
(ISSN ONLINE:- 2583-7176)
https://samvardhini.in

वैदिक साहित्य में शिक्षा का स्वरूप

The Nature of Education in Vedic Literature

डॉ. वैजयन्तीमाला

सारांश –

वैदिक साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार है, वैदिक वाङ्मय में "शिक्षा" शब्द ध्वनि, उच्चारण, स्वर, छन्द,आत्मानुशासन तथा ब्रह्मविद्या के समन्वित तत्त्व का द्योतक है । वैदिक संहिताओं, ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों, उपनिषदों तथा वेदाङ्ग-शिक्षा ग्रन्थों के आलोक में यह प्रतिपादित किया गया हैं कि शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं हैं अपितु "श्रुति- परम्परा" की अक्षुण्णता, व्यक्तित्व-निर्माण, आत्मनुभूत षोडश संस्कार एवं ब्रह्म-साक्षात्कार है ।

वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक विकास को सुदृढ करना है । प्रस्तुत शोध पत्र के द्वारा वैदिक साहित्य में वर्णित शिक्षा की प्रकृति, उद्देश्य, पद्धति, गुरु-शिष्य संबंध, पाठ्यक्रम तथा सामाजिक महत्त्व का विश्लेषण किया गया है । प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वैदिक शिक्षा प्रणाली वर्तमान के आधुनिक शिक्षण सिद्धांतों जैसे – समग्र शिक्षा, नैतिक शिक्षा और अनुभव आधारित शिक्षा की आधारशिला रही है ।

कूटशब्द – वैदिक साहित्य, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, गुरु-शिष्य परंपरा, समग्र शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा ।

मार्गदर्शक - डॉ. किरण खींची
(सहायक आचार्य) व्याकरण विद्या शाखा
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर

भाग्यश्री कुमावत
व्याकरण विद्या शाखा
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर
E-mail - bhagyashreek510@gmail.com

1. प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान-परम्परा में "शिक्षा" का विचार अत्यन्त प्राचीन है । वैदिक साहित्य में शिक्षा का स्वरूप अधिक व्यापक, वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक है । 'ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद' इन चारों वेदों में मन्त्रों की (मौखिक) परम्परा के संरक्षण के लिए वैज्ञानिक पद्धति विकसित हुई है । जो भारतीय साहित्य में वर्णित है । तैत्तिरीयोपनिषद् में कहा गया है -

"शिक्षां व्याख्यास्यामः । वर्णः स्वरः मात्रा बलं साम सन्तानः ।"[1]

यहाँ शिक्षा के छः अंगों का उल्लेख हैं - वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम तथा सन्तान ।

भारतीय ज्ञान परंपरा की दृष्टि से भारतीय संस्कृति का मूल आधार वैदिक साहित्य है । वेदों को विश्व का प्राचीनतम ज्ञानकोष माना जाता है, जिसमें जीवन के विभिन्न आयामों से संबंधित ज्ञान विषयक विषय वस्तु समाहित है । वैदिक युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यवसायिक या बौद्धिक प्रशिक्षण तक सीमित नहीं था अपितु यह मनुष्य के चारों पुरुषार्थ – अर्थ, काम, धर्म और मोक्ष की प्राप्ति का माध्यम था ।

वैदिक शिक्षा प्रणाली व्यक्ति के आत्मानुशासन, नैतिकता, आध्यात्मिकता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति सजग एवं संवेदनशील रूप में कार्य करती थी । वर्तमान समय में जब शिक्षा को पुनः मूल्य आधारित बनाने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है, तब वैदिक शिक्षा प्रणाली का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक रूप से दृष्टिगोचर होता है ।

2. वैदिक साहित्य का स्वरूप

साहित्य का शब्दकोषीय अर्थ "लिखित कार्य, विशेष रूप से जिन्हें श्रेष्ठ या स्थायी कलात्मक योग्यता माना जाता है" के रूप में दिया गया है । भारत के संदर्भ में, जहां कम से कम 5,000 वर्षों से अधिक काल का इतिहास एक अखंड मौखिक (श्रुति शास्त्र) एवं लिखित (पांडुलिपि) परंपरा में जीवित है ।

वैदिक साहित्य चार वेदों, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद ,अथर्ववेद तथा इनसे सम्बद्ध ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् ग्रंथों से मिलकर बना है । वैदिक साहित्य में शिक्षा के विभिन्न सिद्धांत, ज्ञान की विधियाँ तथा जीवन दर्शन का विस्तृत वर्णन मिलता है । उपनिषदों में ज्ञान प्राप्ति के साधन, आत्मज्ञान तथा जीवन के उद्देश्य को विशेष महत्त्व दिया गया है ।

चाणक्य, अपने अर्थशास्त्र में ज्ञान (शिक्षा) को चार प्रकारों में वर्गीकृत करते हैं आन्वीक्षिकी - तर्क और दर्शन को समाहित करते हुए (समसामयिक) विज्ञान के सामान्य अर्थ में उपयोग किया जाता है ।

* त्रयी - पारंपरिक ज्ञान, विशेष रूप से वेदों को संदर्भित करने के लिए उपयोग किया जाता है ।
* वार्ता - धन सृजन (कृषि और वाणिज्य) का प्रतिनिधित्व करने के लिए उपयोग किया जाता है ।
* दण्डनीति - राजनीति और सार्वजनिक प्रशासन का प्रतिनिधित्व करने के लिए उपयोग किया जाता है ।

भारत के शास्त्रीय साहित्य को चतुर्दश-विद्या-स्थान (14) के रूप में वर्णित किया जाता हैं ।

2.1 "शिक्षा" शब्द की व्युत्पत्ति

"शिक्षा" शब्द धातु "शिक्ष्" (अध्ययन, उपदेश, अभ्यास) से निष्पन्न हैं । धातुपाठ में "शिक्ष् विद्योपादाने" के अर्थ में धातु का निर्देश प्राप्त होता हैं । शिक्ष् + घञ् = शिक्षा । यहाँ "घञ्" प्रत्यय भाववाचक संज्ञा का निर्माण करता हैं । अतः शिक्षा का मूल अर्थ **"विद्या-प्राप्ति की प्रक्रिया" या "अध्ययन-उपदेश की विधि"** स्पष्ट होता है । वैदिक सन्दर्भ में यह अर्थ केवल बौद्धिक

[1] (तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली)

अध्ययन तक सीमित नहीं है । यहाँ शिक्षा ध्वनि की शुद्धता, उच्चारण की स्पष्टता और स्मृति/ज्ञान परिमार्जन की परिशुद्धता से सम्बद्ध है ।

3. वैदिक शिक्षा के उद्देश्य

वैदिक शिक्षा का मूल उद्देश्य मनुष्य के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना था। भारतीय वैदिक शिक्षा पद्धति का लक्ष्य व्यक्ति के **शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक** सभी पक्षों का संतुलित निर्माण करना था। वैदिक युग में शिक्षा का प्रमुख ध्येय चरित्र-निर्माण माना जाता था, क्योंकि सुदृढ़ चरित्र ही समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए परम आवश्यक हैं। विद्यार्थी को सत्य, अहिंसा, संयम, अनुशासन, गुरु-भक्ति और जीव-सेवा जैसे गुणों का अभ्यास कराया जाता था जिससे वह आदर्श नागरिक बन सके।

इसके साथ-साथ वैदिक शिक्षा का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य आत्मज्ञान और ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति था। शिक्षा के माध्यम से मनुष्य अपने अस्तित्व, प्रकृति और परम सत्य के संबंध को आत्मसात् करें- यह भावना प्रमुख थी। जीवनोपयोगी कौशल जैसे- कृषि, धनुर्विद्या, चिकित्सा, गणित, ज्योतिष आदि का अध्ययन कराया जाता था ताकि व्यक्ति आत्मनिर्भर बने और समाज के प्रति उत्तरदायी भूमिका का निर्वहन करे।

वैदिक शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित थे –

(1) आध्यात्मिक विकास

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य आत्मज्ञान और मोक्ष की प्राप्ति था । उपनिषदों में अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करने करने में ज्ञान को आधारभूत साधन बताया गया हैं। ज्ञान के द्वारा जिज्ञासा का जन्म होता है और जिज्ञासा-उत्पत्ति पश्चात् परम तत्त्व को प्राप्त करने मे सहायता मिलती है ।

असतो मा सद्गमय ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्माऽमृतं गमय ॥[2]

अर्थ- हे प्रभु! मुझे असत्य से सत्य की ओर, अज्ञानरूपी अंधकार से ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरतत्त्व की ओर ले चलो। यहाँ "तमस्" अज्ञान का प्रतीक है और "ज्योति" ज्ञान का । उपनिषद् स्पष्ट करते हैं कि आत्मज्ञान ही वह प्रकाश है जो मनुष्य के भीतर के भ्रम-जाल, मोह और अविद्या को समाप्त करता है ।

(2) नैतिक एवं चारित्रिक विकास

वैदिक शिक्षा प्रणाली में सत्य, अहिंसा, दया, सेवा तथा अनुशासन जैसे नैतिक मूल्यों को विकसित किया जाता था -

सत्यं वद। धर्मं चर।
स्वाध्यायान्मा प्रमदः।
मातृदेवो भव। पितृदेवो भव।
आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव ॥[3]

---

[2] बृहदारण्यक् उपनिषद् (1.3.28)
[3] तैत्तिरीय उपनिषद् (शिक्षावल्ली 1.11)

अर्थ - सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो, स्वाध्याय में प्रमाद(आलस्य) मत करो। माता, पिता, आचार्य और अतिथि को देवतुल्य समझो। विद्यार्थी के नैतिक और चारित्रिक निर्माण के लिए सत्यवादिता, कर्तव्यपालन, गुरु वाक्य अनुशासन आदि सभी गुण परम आवश्यक हैं।

(3) बौद्धिक विकास

विद्यार्थियों को वेद, दर्शन, व्याकरण, गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि विषयों का ज्ञान दिया जाता था। जिससे छात्र का बौद्धिक एवं सर्वाङ्गीण विकास हो -

यस्तु सञ्चरते देशान् सेवते यस्तु पण्डितान् ।
तस्य विस्तारिता बुद्धिस्तैलबिन्दुरिवाम्भसि ॥[4]

अर्थात् वह व्यक्ति जो विभिन्न देशों में घूमता हैं और विद्वानों की सेवा करता है, उस व्यक्ति की बुद्धि का विस्तार उसी तरह होता हैं, जैसे तेल की बून्द पानी में गिरने के बाद फैल जाती है ।

(4) सामाजिक विकास

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥[5]

अर्थ : जिस प्रकार देवता गण मिल-जुलकर अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं उसी प्रकार तुम सभी साथ-साथ चलो, साथ-साथ बोलो, तुम सबके मन एक समान हों। प्रस्तुत यह मंत्र वैदिक शिक्षा में विद्यार्थियों को समाज के साथ सामंजस्य स्थापित कर कार्य करने की प्रेरणा तथा सामाजिक एकता, सहयोग और सामूहिक चेतना का आदर्श तत्त्व की प्राप्ति लिए प्रेरित करता है ।

शिक्षा को मानव जीवन में एक महत्त्वपूर्ण कार्य माना जाता है क्योंकि शिक्षा के माध्यम से मनुष्य स्वयं को उन क्रूर आदतों से शुद्ध कर सकता है जो उसे गैर-मानव (जानवरों) से अलग करती है और स्वयं को मानव और सामाजिक प्राणी बना सकता है -

येषां न विद्या न तपो न दानम्,ज्ञानं न शीले न गुणो न धर्मः ।

ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥[6]

4. वैदिक शिक्षा प्रणाली की विशेषताएँ

(1) गुरुकुल व्यवस्था

वैदिक कालीन गुरुकुल व्यवस्था प्राचीन भारत की आवासीय शिक्षा प्रणाली थी, जो गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित थी। वैदिक काल में गुरुकुल व्यवस्था के अंतर्गत तीन मुख्य प्रकार की शिक्षा संस्थाएँ थीं। गुरुकुल में विद्यार्थी गुरु के आश्रम में गुरु के निकट रहकर शिक्षा (ज्ञान) ग्रहण करते थे, परिषद् में विषय विशेषज्ञों द्वारा ज्ञान सत्र के द्वारा अधिगम कराया जाता था तथा तपस्थली जैसे नैमिषारण्य आदि स्थान पर सभाओं और प्रवचनों के द्वारा शिक्षण अधिगम अभ्यास का क्रम होता था।

[4] संस्कृत साहित्य/सुभाषित
[5] ऋग्वेद (10.191.2-4)
[6] नीतिशतक

प्रवेश और अवधि – छात्र आठ से दस वर्ष की आयु में उपनयन संस्कार के बाद ब्रह्मचारी स्वरूप प्राप्त करने के पश्चात गुरुकुल में प्रवेश लेते थे तथा १२ से १६ वर्ष तक गुरु के सान्निध्य में रहते हुए शिक्षण प्राप्त करते थे। छात्र (शिष्य) गुरु को पिता तुल्य मानते हुए उनकी सेवा-शुश्रूषा और आज्ञाकारिता का पालन करते थे और निरंतर ज्ञान प्राप्ति हेतु संलग्न रहते थे।

(2) गुरु-शिष्य संबंध

गुरु को अत्यंत सम्माननीय पद प्राप्त था। गुरु और शिष्य के बीच पारिवारिक तथा आध्यात्मिक संबंध होते थे । तैत्तिरीयोपनिषद् के शिक्षावल्ली अध्याय में गुरु-शिष्य सम्बन्ध में मर्यादा विषय वर्णित हैं –

सत्यं वद । धर्मं चर । स्वाध्यायान्मा प्रमदः ।
आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः ।
सत्यान्न प्रमदितव्यम् । धर्मान्न प्रमदितव्यम् । कुशलान्न प्रमदितव्यम् ।
भूत्यै न प्रमदितव्यम् । स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् । [7]

(3) समग्र शिक्षा प्रणाली

वैदिक शिक्षा शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक विकास पर आधारित थी। वैदिक शिक्षा पद्धति में **समग्र शिक्षा** का तात्पर्य था - मनुष्य के **शरीर, मन, बुद्धि, आचरण और आत्मा** सभी का संतुलित विकास। वेद-उपनिषदों में ऐसे अनेक मंत्र मिलते हैं जो शिक्षा को बौद्धिक स्तर तक सीमित नहीं मानकर जीवन के सम्पूर्ण उत्कर्ष का साधन बताते हैं।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः॥[8]

अर्थ - सभी दिशाओं से हमारे पास कल्याणकारी विचार आते रहें। यह मंत्र मानसिक उदारता, बौद्धिक विस्तार और सर्वांगीण दृष्टिकोण की प्रेरणा देता है, जो समग्र शिक्षा का आवश्यक अंग है । वैदिक शिक्षा में समग्रता का अर्थ, ज्ञान,आचरण,आध्यात्मिक चेतना,सामाजिक उत्तरदायित्व का संतुलन निर्धारित करना है । विद्यार्थी को ऐसा शिक्षित करना कि वह विचार, व्यवहार और आत्मबोध- तीनों स्तरों पर विकसित हो, यही वैदिक समग्र शिक्षा प्रणाली का मूल लक्ष्य है ।

(4) अनुभव आधारित शिक्षा

वैदिक शिक्षा प्रणाली में **अनुभव आधारित शिक्षा** को अत्यंत महत्त्व दिया गया है । वैदिक शिक्षा में अनुभव आधारित पद्धति का अर्थ **श्रवण (सुनना), मनन (विचार), निदिध्यासन (अनुभव/ अभ्यास)** है। ज्ञान सुनने, विचार करने के साथ **अनुभूति, अभ्यास और प्रत्यक्ष बोध** से प्राप्त होता है । वेद-उपनिषदों में यह भाव बार-बार प्रकट होता है । वैदिक शिक्षा में गुरु के सान्निध्य में रहकर अभ्यास और अनुभव से सीखने पर बल दिया जाता था। विद्यार्थियों को जीवन कौशल सिखाए जाते थे। शिक्षा सैद्धांतिक के साथ-साथ व्यवहारिक भी थी।

तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्
समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम् ॥[9]

[7] . तैतिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली (1–11 अनुवाक)
[8] . ऋग्वेद (1.89.1)
[9] . मुण्डकोपनिषद् (1.2.12)

अर्थ - उस (ब्रह्म/परम सत्य) के **विज्ञान** अर्थात् प्रत्यक्ष अनुभूति की प्राप्ति के लिए विद्यार्थी को गुरु के पास जाना चाहिए, जो शास्त्रज्ञ और अनुभवी (ब्रह्मनिष्ठ) हो । यहाँ "विज्ञान" शब्द केवल सैद्धान्तिक ज्ञान नहीं अपितु **अनुभवजन्य बोध** का द्योतक है । विद्यार्थी को प्रकृति, यज्ञ, सेवा, गुरु-संग और आत्मचिन्तन के माध्यम से ज्ञान को **जीवन में अनुभव करने** की शिक्षा दी गयी है ।

5. वैदिक शिक्षा का पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम शब्द का उद्भव लैटिन शब्द 'क्युरेरे' से हुआ हैं। जिसका अर्थ है दौड़ना अथवा दौड़ का मैदान अथवा लक्ष्य तक पहुँचने के लिए दौड़ का मार्ग । वैदिक शिक्षा में **"पाठ्यक्रम"** का आशय **अध्ययन विषय** में वेद-वेदाङ्ग, उपनिषद् आदि। **आचरण शिक्षा** में सत्य, धर्म, संयम। **व्यावहारिक कौशल** में कृषि, शिल्प, समाज-सेवा । **आध्यात्मिक साधना** में स्वाध्याय, ध्यान, जप, आत्मचिन्तन इत्यादि विविध विषय समाहित हैं। वैदिक "पाठ्यक्रम" केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं अपितु जीवन जीने की कला विधि है । वैदिक शिक्षा में "पाठ्यक्रम" का अर्थ ज्ञान, व्यवहार, नैतिकता और आध्यात्मिक साधना का समन्वित अध्ययन का क्रम है । इसका उद्देश्य व्यक्ति को विद्वान् के साथ सदाचारी और आत्मज्ञानी बनाना है । मुण्डकोपनिषद् में दो प्रकार की विद्या कही गई हैं : -

"द्वे विद्ये वेदितव्ये परा चापरा च ।"[10]

अपरा विद्या = वेद, वेदाङ्ग आदि / परा विद्या = ब्रह्मविद्या

वैदिक शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास पर केंद्रित था। यह दो मुख्य भागों - अपरा (लौकिक) और परा (आध्यात्मिक) रूप में विभाजित था। यहाँ शिक्षा दोनों प्रणालियों को जोड़ने वाला सेतु है ।

- वैदिक शिक्षा प्रणाली में विविध विषयों का अध्ययन कराया जाता था, जैसे –

वेद	**ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद**
वेदांग	**शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छंद, निरुक्त और ज्योतिष**
इतिहास	**रामायण और महाभारत**
पुराण	**विष्णुपुराण, भागवत आदि**
धर्मशास्त्र	**मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य-स्मृति, पराशर-स्मृति आदि**
दर्शन	**आस्तिक तथा नास्तिक**
धनुर्वेद	**युद्धकला(तीरंदाजी)**
गंधर्व-वेद	**नृत्य, संगीत आदि**

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के समग्र विकास को ध्यान में रखकर बनाया गया था।

[10] . मुण्डकोपनिषद् (1.1.4–5)

- **प्रारंभिक पाठ्यक्रम**

प्रारंभिक स्तर पर भाषा, व्याकरण, छंदशास्त्र, गणित का प्राथमिक ज्ञान तथा सामाजिक व्यवहार और धार्मिक क्रियाओं का प्रशिक्षण दिया जाता था। उत्तर वैदिक काल में कृषि, पशुपालन, कला-कौशल जैसे व्यावहारिक सम्बद्ध विषय की शिक्षा प्रचलन में थी। यह शिक्षा परिवार या गुरुकुल में लगभग 5 वर्ष की आयु से आरंभ होती थी।

- **अपरा पाठ्यक्रम (लौकिक)**

इसमें भाषा, व्याकरण, अंकशास्त्र, कृषि, पशुपालन, संगीत, नृत्य, हस्तकला (कताई, बुनाई, धातुकर्म), अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, भूगोल, प्राणिशास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद और सैन्य शिक्षा आदि प्रमुख विषय थे। ये विषय शिष्य की योग्यता अनुसार ऐच्छिक थे। गुरुकुल व्यवस्था में व्यायाम और गुरु-सेवा अनिवार्य थी।

- **परा पाठ्यक्रम (आध्यात्मिक)**

वैदिक साहित्य (वेद, वेदांग, उपनिषद्), धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र का गहन अध्ययन प्रमुख विषय था । इंद्रिय-निग्रह, धार्मिक आचरण, ईश्वर-भक्ति, संध्यावंदन और यज्ञ-क्रियाएँ इसमें सम्मिलित थीं । इसका उद्देश्य आत्म-साक्षात्कार था।

6. शिक्षण विधियाँ

वैदिक काल में शिक्षण की प्रमुख विधियाँ निम्नलिखित थीं -

वैदिक शिक्षा की शिक्षण विधियाँ मुख्य रूप से मौखिक और गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित थीं। ये विधियाँ शिष्य के श्रवण, मनन और निदिध्यासन पर केंद्रित रूप में कार्य करती थीं।

मौखिक शिक्षण विधियाँ

शिक्षण प्रायः मौखिक रूप से होता था, जिसमें गुरु (शिक्षक) वैदिक मंत्रों का उच्चारण करते थे तत्पश्चात् शिष्य गुरु निर्दिष्ट वाक्यों का अनुकरण कर कंठस्थीकरण पद्धति से प्रायोगिक रूप में क्रिया करते थे। संवाद पद्धति के द्वारा प्रश्नोत्तर, शंका-समाधान, व्याख्यान और वाद-विवाद इत्यादि कार्य किए जाते थे । अनुकरण, आवृत्ति और कंठस्थ विधियाँ भाषा के व्याकरणिक ज्ञान के लिए विशेष रूप से प्रयोग में ली जाती थीं ।

क्रिया-प्रधान विधियाँ

कथन विधि के द्वारा कृषि, पशुपालन, कला-कौशल, आयुर्वेद और सैन्य शिक्षा का प्रदर्शन एवं प्रायोगिक अभ्यास का प्रशिक्षण दिया जाता था। गुरु (शिक्षक) क्रिया का स्वयं प्रदर्शन करते तथा विषय की विधि स्पष्ट करते थे जिससे शिष्य अभ्यास द्वारा दक्षता प्राप्त करते थे।

अन्य प्रमुख विशेषताएँ

शिक्षा के माध्यम के रूप में भाषा संस्कृत थी । कक्षा-कक्ष में कक्षानायक-पद्धति से (वरिष्ठ शिष्य द्वारा कनिष्ठों को पढ़ाना) प्रचलन में था । प्रत्येक शिष्य पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया जाता था। श्रवण (सुनना), मनन (चिंतन) और निदिध्यासन

(अध्यवसाय) के चरण का पालन अनिवार्य था। विधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में चिंतन तथा विश्लेषण क्षमता विकसित हो सके इसके लिए उदाहरण, सूत्र, कहानियाण और अलंकारों के द्वारा पठन-पाठन कराया जाता था ।

7. वैदिक शिक्षा का आधुनिक शिक्षा पर प्रभाव

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में भी भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित करने पर विशेष बल दिया गया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में वैदिक शिक्षा के अनेक तत्त्व दिखाई देते हैं, जैसे- मूल्य आधारित शिक्षा, समग्र विकास की अवधारणा, गुरु-शिष्य संवाद पद्धति,जीवन कौशल आधारित शिक्षा आदि।

वैदिक शिक्षा	आधुनिक शिक्षा
ध्वनि-शुद्धि	सूचना-प्रदाय
आत्मसंस्कार	कौशल-विकास
गुरु-शिष्य संवाद	कक्षा-व्यवस्था
श्रुति-परम्परा	Written text

वैदिक शिक्षा में मौखिकता का महत्त्व था। स्मृति और पुनरावृत्ति ही ज्ञान के संरक्षण का माध्यम था।

8. **समकालीन सन्दर्भ में प्रासंगिकता**

National Education Policy 2020 में **भारतीय ज्ञानपरम्परा** पर विशेष बल दिया गया है, जो वैदिक शिक्षा-दर्शन से प्रेरित है। वर्तमान की शिक्षा प्रणाली में मूल्य-संकट स्पष्ट हैं। वैदिक शिक्षा-दृष्टि निम्न बिन्दुओं पर मार्गदर्शक हो सकती है -

1. चरित्रोन्मुखी शिक्षा
2. समग्र विकास
3. नैतिक आधार
4. नैतिक आदर्श के रूप में शिक्षक

9. शोध के उद्देश्य

1. वैदिक साहित्य में शिक्षा की अवधारणा का विश्लेषण करना।
2. वैदिक शिक्षा प्रणाली की संरचना का अध्ययन करना।
3. वैदिक ग्रंथों में निहित शिक्षण-विधियों का अन्वेषण करना।
4. शिक्षा की अवधारणा में समग्रता को स्पष्ट करना।
5. नैतिक एवं चारित्रिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास में वैदिक शिक्षा की भूमिका का परीक्षण करना।
6. आधुनिक शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में वैदिक शिक्षा की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

10. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र में शोध कार्य हेतु मुख्यतः **गुणात्मक** एवं **विश्लेषणात्मक** विधि का उपयोग किया गया हैं। अध्ययन का आधार वैदिक ग्रंथ, दार्शनिक अवधारणाएँ तथा वैदिक वैचारिक विश्लेषण है । शोध पद्धति के द्वारा विषय को **ग्रंथाधारित, दार्शनिक तथा विश्लेषणात्मक** दृष्टि से व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक रूप में प्रस्तुत किया गया हैं।

10.1 शोध दृष्टिकोण

- **गुणात्मक दृष्टिकोण** – वैदिक ग्रंथों, श्लोकों, भाष्यों एवं विद्वानों के वैचारिक मतों का व्याख्यात्मक अध्ययन।
- **ऐतिहासिक दृष्टिकोण** – भारतीय शिक्षा की परंपरा, विकास एवं कालक्रम का अध्ययन।
- **दार्शनिक दृष्टिकोण** – भारतीय शिक्षा के मूल तत्त्व, उद्देश्य एवं जीवन-दृष्टि का विवेचन।

10.2 डेटा संकलन विधि

- **पाठ विश्लेषण** – वैदिक मूल ग्रंथों के श्लोकों का अध्ययन।
- **सामग्री विश्लेषण** – वैदिक शिक्षा संबंधी अवधारणाओं का वर्गीकरण।
- **तुलनात्मक अध्ययन** – वैदिक एवं आधुनिक शिक्षा के तत्त्वों की तुलना।

11. निष्कर्ष

वैदिक साहित्य में शिक्षा का स्वरूप अत्यंत व्यापक एवं समग्र दृष्टि लिए हुए है । यह ज्ञान प्राप्ति के माध्यम के साथ मानव जीवन के पूर्ण संतुलित विकास का साधन पथ है । वैदिक शिक्षा प्रणाली में नैतिकता, आध्यात्मिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व पर विशेष बल दिया गया है ।

वर्तमान की शिक्षा प्रणाली में वैदिक शिक्षा के सिद्धांतों को शिक्षण प्रणाली में योजित करते हुए शिक्षा को अधिक प्रभावी एवं मूल्य आधारित बनाया जा सकता है । अतः वैदिक शिक्षा प्रणाली का अध्ययन-अध्यापन आधुनिक शिक्षा व्यवस्था सुधार के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है । उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वैदिक परिप्रेक्ष्य में "शिक्षा" की संकल्पना बहुआयामी संकल्पना को सिद्ध करने में सक्षम है । यह केवल ध्वनिशास्त्र नहीं, अपितु आत्मविद्या है । केवल उच्चारण ही नहीं, अपितु आत्मसंस्कार है । केवल ज्ञान-प्राप्ति साधन नहीं, अपितु ब्रह्मसाक्षात्कार की भूमिका में अग्रगण्य हैं ।

भाषाशास्त्रीय दृष्टि से शिक्षा ध्वनि-संरक्षण की वैज्ञानिक प्रणाली है । दार्शनिक दृष्टि से वह आत्म-परिष्कार की साधना का मार्ग है । सांस्कृतिक दृष्टि से वह भारतीय ज्ञान परम्परा के संरक्षण का माध्यम हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि **"सा विद्या या विमुक्तये"** यही वैदिक शिक्षा-दृष्टि का सार तत्त्व है ।

संदर्भ ग्रंथ -

1. ऋग्वेद (1.89.1)
2. ऋग्वेद (10.191.2-4)
3. तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली
4. तैत्तिरीय उपनिषद् (शिक्षावल्ली 1.11)
5. तैतिरीयोपनिषद् (शिक्षावल्ली १–११ अनुवाक्)
6. नीतिशतक
7. पाणिनीय शिक्षा
8. बृहदारण्यक् उपनिषद् (1.3.28)
9. मुण्डकोपनिषद् (1.2.12)
10. मुण्डकोपनिषद् (1.1.4–5)
11. संस्कृत साहित्य/सुभाषित
12. याज्ञवल्क्य-शिक्षा